डायरी का एक पन्ना

लेखक परिचय: सीताराम सेकसरिया

सीताराम सेकसरिया का जन्म 1892 में राजस्थान के नवलगढ़ में हुआ। आपको विद्यालय जाने का अवसर नहीं मिला, अतः आपने स्वाध्याय से ही पढ़ना लिखना सीखा। व्यापार और व्यवसाय से जुड़े रहकर भी आप अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा नारी शिक्षण संस्थाओं के प्रेरक व संस्थापक रहे। स्वतंत्रता आंदोलन में आप महात्मा गाँधी,रवींद्र ठाकुर एवं सुभाष चंद्र बोस के साथ जुड़े रहे तथा सत्याग्रह आंदोलन के समय आप जेल भी गए। कुछ वर्ष आप आजाद हिंद फौज के मंत्री भी रहे। भारत सरकार ने आपको 1962 में पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया। आप का देहांत 1962 में हुआ।

पाठ का सार:

26 जनवरी 1931 (कलकत्ता का स्वतंत्रता दिवस):- 26 जनवरी 1930 को सारे भारत में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। 26 जनवरी 1931 के दिन इस दिन की पुनरावृत्ति थी और कलकत्तावासियों ने निर्णय लिया थाकि इस दिन को बहुत धूमधाम से मनाएँगे। केवल प्रचार पर दो हजार रुपये खर्च किए गए थे।

बड़े बाजार के अधिकतर घरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया था। कई घरों को खूब सजाया गया था जैसे स्वतंत्रता मिल गई हो। सब ओर उत्साह वनवीनता थी। दूसरी ओर पुलिस इस दिन को असफल बनाने के लिए सारे शहर में गश्त लगा रही थी। ट्रैफिक पुलिस भी इसी काम में लगी थी। सभी मैदानों व पार्कोंको पुलिस ने घेर रखा था।

26 जनवरी 1931 के दिन कलकत्ता के उत्सव:- श्रद्धानंद पार्क में बंगाल प्रांत विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा फहराने गए तो उन्हें पकड़ लिया

गया। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए, परंतु उन्हें पार्क में नहीं जाने दिया गया। गुजराती सेविका संघ की तरफ से जुलूस निकाला गया तथा कई लड़कियों को गिरफ्तार किया गया। 11:00 बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने विद्यालय में झंडोत्सव मनाया। जानकी देवी, मदालसा भी वहाँ थीं। लड़कियों को इस दिन का महत्व? बताया गया।

सुभाष बाबू का जुलूस:-सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास परथा। मोनूमेंट वाले मैदान में 3:00 बजे से ही हजारों आदमियों की भीड़ इकट्ठी हो गई। लोग टोलियाँ बनाकर इधर-उधर घूमने लगे। मोनूमेंट वाले मैदान में सभा एक "ओपन लड़ाई" थी। पुलिस कमिश्नर का नोटिस था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं होगी। आप अगर सभा में भाग लेंगे तो आपको दोषी समझा जाएगा। दूसरी तरफ काउंसिल का नोटिस निकाला गया। ठीक 4:24 मिनट पर मोनूमेंट वाले मैदान में मोनूमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी।

चारबजकरदसमिनट पर सुभाष बाबू जुलूस लेकर आए। उन्हें चौरंगी पर रोका गया। भीड़ की अधिकता के कारण पुलिस जुलूस को रोक नहीं सकी और जुलूस मैदान के मोड़ पर पहुँच गया। पुलिस लाठियाँ बरसा रही थी। सुभाष बाबू वंदेमातरम कहते हुए आगे बढ़ रहेथे। क्षितीश चटर्जी का सिर फट गया। सुभाष बाबू को गिरफ्तार कर लिया गया।

स्त्रियों की भूमिका:-स्त्रियों ने मोनूमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर झंडा फहराया और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी। कुछ देर बाद स्त्रियाँ जुलूस बनाकर आगे चलीं। बहुत भीड़ थी। बीच-बीच में पुलिस लाठियाँ चला रही थी। धर्मतल्ले के मोड़ पर जुलूस टूट गया। पुलिस ने 50-60 स्त्रियों को पकड़कर लाल बाजार जेल भेज दिया। विमल प्रतिभा ने फिर स्त्रियों को इकट्ठा किया और जुलूस लेकर आगे बढ़ी।

घायलों का उपचार:-105 स्त्रियाँ गिरफ्तार हुई। इससे पहले इतनी स्त्रियाँ गिरफ्तार नहीं हुई थी। कांग्रेस ऑफिस में अनेक घायल पहुँचे। डॉक्टर दासगुप्ता

उनका उपचार कर रहे थे तथा उनकी फोटो उतरवा रहे थे। 160 घायल अस्पताल पहुँचे। आज का दिन अपूर्व है। कलकत्ता के नाम पर जो कलंक लगा था कि यहां कुछ नहीं होता, काफी हद तक धुल गया था।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) कलकत्तावासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था?

उत्तर: जब 26 जनवरी 1930 के दिन स्वतंत्रता दिवस मनाया गया तथा कलकत्ता पर कलंक लगा था कि कलकत्तामें स्वतंत्रता के लिए कुछ विशेष काम नहींहोता। कलकत्ता वासी अपने पर लगे कलंक को मिटाना चाहते थे और बहुत धूमधाम से स्वतंत्रता दिवस मनाने वाले थे। इसीलिए यह दिन उनके लिए महत्वपूर्ण था।

प्रश्न 2) सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

उत्तर: सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोंदास पर था।

प्रश्न 3)विद्यार्थी संघके मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तरः विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने जब श्रद्धानंद पार्क में झंडा गाढ़ा तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया तथा लोगों को मारपीट कर वहाँ से हटा दिया।

प्रश्न 4) लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा कर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

उत्तर: लोग सार्वजनिक स्थानों वमकानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर संकेत देना चाहते थे कि उन्हें स्वतंत्रता चाहिए और अधिक गुलामी नहीं चाहिए।

प्रश्न 5) पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?

उत्तर: पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को इसलिए घेर रखा था, ताकि 26 जनवरी 1931 के दिन लोग यहाँ इकट्ठे न हो सकेँव राष्ट्रीय ध्वज न फहरा सकें।

प्रश्न 6) 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई?

उत्तरः इस दिन को अमर बनाने के लिए सार्वजनिक स्थानों एवं घरों पर झंडे फहराए गए। घरोंको सजाया गया था। केवल प्रचार पर ही ₹2000 खर्च किए गए थे। लोग सुबह से ही पार्कों, मैदानों में इकट्ठे हो रहे थे। शाम 4:24 मिनट पर मोनूमेंट वाले मैदान में झंडा फहराया जाना था तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जानी थी।

प्रश्न 7) आज जो बात थी वह निराली थी" किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 26 जनवरी 1931 के दिन को निराला बनाने के लिए घरों को खूब सजाया गया था। जुलूस निकाले जा रहे थे। मुख्य सभा मोनूमेंट वाले मैदान में होने वाली थी। 4:24 मिनट पर स्त्रियों ने मोनूमेंट पर झंडा फहराया व स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी। इस दिन लगभग 105 स्त्रियाँ गिरफ्तार हुई। कई लोग घायल हुए तथा कोलकाता पर जो कलंक लगा था कि यहां के लोग स्वतंत्रता के लिए कुछ नहीं कर रहे, वह धुल गया। इसीलिए कहा गया कि आज जो बात थी वह निराली थी।

प्रश्न 8) पुलिस कमिश्नर के नोटिस और काउंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

उत्तर: पुलिस कमिश्नर का नोटिस व काउंसिल का नोटिस एक दूसरे के विपरीत थे।

पुलिसकमिश्नर का नोटिस था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोगसभा में भाग लेंगे, उन्हें दोषी समझा जाएगा।

जबकि काउंसिल के नोटिस के अनुसार 31 जनवरी 1931 के दिन मोनूमेंट के नीचे 4:24 मिनट पर झंडा फहराया जाएगा एवं स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण को उपस्थित होना चाहिए।

प्रश्न 9) धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

उत्तर: स्त्रियाँ जब जुलूस बनाकर आगे चलीं, उनके साथ बहुत भीड़ हो गई। कुछ समय के लिए पुलिस ठंडी पड़ी। फिर पुलिस ने डंडे चलाने शुरू कर दिये। भीड़ अधिक होने के कारण बहुत लोग घायल हुए। इस कारण धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया। 50-60 स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गई।

प्रश्न 10) "डाक्टर दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देखरेख तो कर ही रहे थे, उनके फोटो भी उतरवा रहे थे।" उन लोगों के फोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लोगों के चित्र खिंचवाने के अनेक कारण थे :-

1. वह अंग्रेजों के अत्याचार से अन्य लोगों को अवगत कराना चाहते थे।
2. चित्रों को भविष्य के लिए संग्रहित करना चाहते थे।
3. दूसरों को प्रेरित करने के लिए
4. शेष भारत को बताने के लिए कि कोलकाता के लोग भी स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहे हैं।

प्रश्न 11) सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

उत्तर: सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की महत्वपूर्ण भूमिका थी। सुभाष बाबू को मोनूमेंट वाले मैदान में जाने ही नहीं दिया गया। तब स्त्रियों ने मोनूमेंट पर झंडा फहराया और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी। इसके बाद जुलूस बनाकर चल दीं। धर्मतल्ले के मोड़ पर जुलूस टूट गया। 50-60 स्त्रियाँ वहीं पर बैठ गई। विमल प्रतिभा ने जुलूस का नेतृत्व संभाला और आगे चल दी। कुल मिलाकर 105 स्त्रियाँ गिरफ्तार हुई।

प्रश्न 12) जुलूस के लाल बाजार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

उत्तर: विमल प्रतिभा के नेतृत्व में जुलूस आगे बढ़ा। यहाँ बृजमोहन गोयंका जुलूस में शामिल हो गए। पुलिस ने इन्हें एक बार पकड़ कर छोड़ दिया। तब यह लगभग 200 लोगों का जुलूस बनाकर लाल बाजार पहुँचे तथा इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

प्रश्न 13) "जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है, तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी"यहाँ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर: यहाँ अंग्रेज कमिश्नर द्वारा लागू कानून को भंग करने की बात की गई है कमिश्नर ने आदेश निकाला था कि 26 जनवरी 1931 के दिन कोई भी सभा करना कानूनी अपराध है। कानून भंग करना बिल्कुल ठीक था, क्योंकि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है तथा भारतीय स्वतंत्रता को चाहते थे और जन-जन में स्वतंत्रता के भाव का संचार करना चाहते थे।

प्रश्न 14) "बहुत से लोग घायल हुए,बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत सी स्त्रियाँ जेल गई, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है।" आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: 26 जनवरी 1931 के दिन अनेक लोग घायल हुए, बहुत से लोग लॉकअप में गए, बहुत सी स्त्रियाँ जेल गई, फिर भी यह दिल अपूर्व था क्योंकि भारतीय अंग्रेजों को बता देना चाहते थे कि अब उन्हें गुलामी नहीं चाहिए। वह अब अंग्रेजों के अत्याचार नहीं सहेंगे, उनका विरोध करेंगे। केवल कलकत्ता में ही नहीं, यह लहर पूरे देश में थी।

प्रश्न 15) "आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ताके नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है, वह आज बहुत अंश में धुल गया।" व्याख्या कीजिए।

उत्तर: 26 जनवरी 1930 के दिन जब पहली बार स्वतंत्रता संग्राम मनाया गया, तब कलकत्ता के नाम पर कलंक लगा कि वहाँ के लोग स्वतंत्रता के लिए कार्य नहीं कर रहे हैं। कलकत्ता वासियों ने 26 जनवरी 1931 के दिन निश्चय किया कि वह कलकत्ता पर लगे कलंक को मिटा देंगे। इसलिए कलकत्ता के बाजारों व घरों पर झंडे लगाए गए। मुख्य सभा का आयोजन मोनूमेंट वाले मैदान में होने वाला था। स्त्रियों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। 105 स्त्रियाँ गिरफ्तार हुई। अनेक लोग घायल हुए। इस प्रकार कलकत्ता वासियों ने कलकत्ता पर लगे कलंक कोधो दिया।

प्रश्न 16) "खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।" समझाइए।

उत्तर: पुलिस कमिश्नर का नोटिस थाकि 26 जनवरी 1931 के दिन कोई सभा नहीं की जाएगी। अगर कोई सभा में भाग लेता है तो वह कानून का उल्लंघन होगा। जबकि कौंसिल का नोटिस था कि ठीक 4:24 मिनट पर झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। अधिक से अधिक लोगों को इस

सभा में भाग लेना चाहिए। इसीलिए कहा गया हैकि खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं हुई थी।

प्रश्न 17) 26 जनवरी 1931 के दिन बड़े बाजार का माहौल कैसा था?

उत्तर: 26 जनवरी 1931 के दिन बड़े बाजार के लगभग सभी मकानों पर झंडा फहरा रहा था। कई मकानों को ऐसे सजाया गया था मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। लोगों का कहना था ऐसी सजावट पहले कभी नहीं हुई थी। जिस रास्ते से मनुष्य जाते थे, उसी रास्ते पर उत्साह व नवीनता थी।

प्रश्न 18) ओपन लड़ाई किसे कहा गया है? वह अपूर्व क्यों थी?

उत्तर: अंग्रेज सरकार द्वारा धारा के अनुसार सार्वजनिक सभा गैरकानूनी थी। फिर भी 26 जनवरी 1931 के दिन कौंसिल के नोटिस के अनुसार 4:24 मिनट पर मोनूमेंट वाले मैदान में झंडा फहराया फहराया गयाऔर स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी गई। स्त्रियों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। अनेक लोग घायल हुए। लगभग 105 स्त्रियाँ भी गिरफ्तार हुई। कलकत्ता के नाम पर लगा कलंक मिट गया। इसी कारण यह ओपन लड़ाई अपूर्व थी।

प्रश्न 19) 26 जनवरी 1931 के दिन कोलकाता के मार्गों की क्या स्थिति थी?

उत्तर: कलकत्ता के सभी मार्गों पर पुलिस गश्त लगा रही थी। जिस मार्ग पर जुलूस निकाले गए,वहाँ पुलिस ने लाठियाँ चलाईं। यहाँ तक कि उन्होंने स्त्रियों के जुलूस को भी नहीं छोड़ा। लगभग 105 स्त्रियां गिरफ्तार की गई और अनेक लोग घायल हुए।

प्रश्न 20) "डायरी का एक पन्ना" पाठ में क्या महत्वपूर्ण संदेश दिया गया है?

उत्तर: "डायरी का एक पन्ना" पाठ में संदेश दिया गया है कि स्वतंत्रता भारतीयों का जन्म सिद्ध अधिकार है। उन्हें अब वह अपना हक चाहिए। इसके लिए वह अंग्रेजों के अत्याचार सहकर भी पीछे नहीं हटेंगे।

प्रश्न 21) जुलूस और प्रदर्शन को रोकने के लिए पुलिस का क्या प्रबंध था? "डायरी का एक पन्ना"पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर: जुलूस और प्रदर्शन को रोकने के लिए पुलिस पूरे शहर में गश्त लगा रही थी। ट्रैफिक पुलिस को भी इसी काम पर लगाया गया था। पार्कों और मैदानों को पुलिस ने घेर रखा था। जहाँ भी झंडा फहराने का यत्न किया जाता, वहाँपुलिस लाठी चलाती। महत्वपूर्ण नेताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया, जैसे - सुभाष बाबू, पूर्णोदास, अविनाश बाबू आदि। यहाँ तक कि लगभग 105 स्त्रियों को भी गिरफ्तार किया गया। अनेक लोग घायल हुए।

*****

VASUNDHARAHINDI.COM